Sub- Philosophy — बुद्धिवाद (Rationalism) — Paper - II

B.A. I (Hons)

बुद्धिवाद यह एक ज्ञान शास्त्रीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि द्वारा ही हो सकती है, किसी दूसरे साधन से नहीं। बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान सार्वभौम और अनिवार्य होता है। सार्वभौम होने का अर्थ है कि वह सभी देश और काल के पदार्थों के विषय में सत्य होता है, इसकी सत्यता किसी देश विशेष या काल विशेष तक सीमित नहीं रहती। अनिवार्य होने का मतलब है कि इसकी सत्यता का निवारण नहीं हो सकता। अतः इसका अपवाद या विपरीत सत्य नहीं हो सकता। बुद्धिवादी सिद्धान्त अनुभव को ज्ञान का उद्गम न मानकर बुद्धि को समस्त सत् सार्वभौम की जननी मानते हैं। बुद्धि हमें जन्म से ही मिलती है इसी से हम समस्त ज्ञान प्राप्त करते हैं। ज्ञान प्रत्यय के रूप में होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि हमारे ये प्रत्यय जन्म से हमारे साथ हैं ये जन्मजात हैं। बुद्धिवाद के अनुसार वास्तविक सत्य गणितीय निर्देशन से प्राप्त होते हैं इन निर्देशनों का आधार कुछ स्वयं सिद्धियाँ होती हैं। इन स्वयं सिद्धियों से आगे ज्ञान की उत्पत्ति होती है। इस विचार का प्रतिपादन सुकरात, प्लेटो और अरस्तु ने किया था। इसी दृष्टि से इन्हें बुद्धिवाद का आधुनिक प्रवर्तक कहा जा सकता है। इन्होंने इन्द्रियजन्य संवेदन का विरोध करते हुए यह बतलाया कि इन्द्रियजन्य ज्ञान अस्थायी एवं अल्पकालीन है किन्तु आधुनिक दर्शन के जनक देकार्त ने बतलाया सत् और असत् ज्ञान की निर्णायिका हमारी बुद्धि ही है। अतः जन्मजात प्रत्यय ही सत्य सार्वभौम एवं अनिवार्य ज्ञान के मूल हैं। हमारे मन में कुछ प्रत्यय जन्मजात हैं और सत् ज्ञान के ... ईश्वर सम्बन्धी प्रत्यय भी ऐसा ही है। इन सभी प्रत्ययों को स्वयं ईश्वर ने ही हमारे जन्म के समय अंकित कर दिया था। समस्त सत् ज्ञान इन जन्मजात प्रत्ययों जो स्वयं सिद्ध हैं का निगमन है। यह निगमन द्वारा जन्मजात प्रत्ययों से प्राप्त ज्ञान निश्चित सत् और सार्वभौम है जिस प्रकार उसी प्रकार

रेखा गणित में स्वयं सिद्धियों से निकाले गये निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। डेकार्ट और स्पिनोज अतिरिक्त विशेष के समर्थक हैं इस प्रकार का बुद्धिवाद प्रतिनिधि बुद्धिवाद के नाम से जाना जाता है। पॉलसन ने इस प्रकार के बुद्धिवाद को गणित पर आधारित बुद्धिवाद की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

स्पिनोजा भी डेकार्ट की भाँति कुछ सहज प्रत्ययों को ही जन्मजात मानते उनकी दृष्टि में अनुभव प्रसूत ज्ञान अपूर्ण एवं अस्पष्ट ज्ञान होते हैं और बुद्धि जो ईश्वर से सभी वस्तुओं का सम्बन्ध दिखाती है। इस प्रकार डेकार्ट और स्पिनोजा बुद्धि को ज्ञान की जननी और मन को कुछ प्रत्ययों का शाश्वत वास स्थल बतलाते हैं। बौद्धिक ज्ञान की प्रामाणिकता के विषय में स्पिनोजा का अपना मत है। वे मानते हैं कि विचार और विस्तार चेतन और जड़ दोनों एक ही ईश्वर के दो धर्म है दोनों में एक ही तत्व ईश्वर व्यक्त है। हमारी संचित बुद्धि इसके विचार गुणों का पर्याय है और भौतिक जगत विस्तार गुण का है इसलिए बुद्धि और बाहरी जगत में संवादिता होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि बौद्धिक ज्ञान विषय के अनुरूप, यथार्थ प्रमाणिक होता है क्योंकि दोनों, विचार व विस्तार एक ही ईश्वर के पर्याय हैं बुद्धि और भूत या भौतिक जगत एक ही ईश्वर के पर्याय हैं स्पिनोजा के इस मत को समानान्तरवाद जड़ चेतन संबंधी कहते हैं।

There is nothing in the intellect which was not first in the sense except the intellect of itself

Libnitez

बुद्धि को ज्ञान की जननी सभी बुद्धिवादी मानते हैं जर्मन दार्शनिक लाइबनित्ज बुद्धि की भूमिका को स्वीकार करते हुए बुद्धिवादियों के वर्ग में आता है और साथ ही साथ देकार्ट और स्पिनोजा से आगे बढ़कर इस बात को स्वीकार करता है कि हमारे सभी प्रत्यय जन्मजात हैं इस प्रकार हम पाते हैं कि लाइबनित्ज के दर्शन में बुद्धिवाद अपनी परम सीमा पर पहुँच जाता है।

लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन किया और उसका तर्क था कि यदि ये प्रत्यय ~~जन्म जात~~ जन्मजात होते तो इनका ज्ञान बालक अशिक्षितों, पागल, और अविकसित समुदाय के व्यक्तियों को होना चाहिए इस स्थल पर लाइबनित्ज के अचेतन पक्ष की ओर संकेत करता है। प्रत्ययों को अचेतन मन में अविकसित होने के कारण जन्मजात होने पर भी अचेतन मन में अविकसित होने के निश्चित इनसे अज्ञात रहने के अवस्था को समझना को निश्चित करता है। इस प्रकार प्रत्ययों को जन्मजात मानते हुए लॉक इस बात का खण्डन करता है कि प्रत्ययों का जन्मजात होने के लिए हमारा इनसे अवगत होना भी अनिवार्य है।

अनुभववादियों के समान लाइबनित्ज मन को निष्क्रिय नहीं मानते हैं वह इस बात को स्वीकार नहीं करता है कि मन कोरे कागज के समान है मन अनुभव के आधार पर अंकित होता है। वह मन को एक ऐसे संगमरमर के टुकड़े के समान बताता है कि जिसकी धारियों में भविष्यकाल में बननेवाली प्रतिमाओं का रूप प्रथम ही निहित होता है।

लाइबनित्ज सभी प्रत्ययों को जन्मजात बताता तो है किन्तु वह जन्मजात शब्द का प्रयोग एक

एक समान रूप से ही नहीं आ जाता है वह कभी कुछ प्रवृतियों को कभी कुछ पदार्थों को ध्यान में लाकर आत्मा के ज्ञान को जागृत करता है। अनुभववादियों का इस सिद्धान्त का बुद्धि के पास कोई भी कोई सामग्री नहीं है जो इन्द्रिय के पास नहीं थी। लाइबनिज यह संशोधन प्रस्तुत करता है स्वयं बुद्धि को छोड़कर बुद्धि में ऐसी कोई बात नहीं है जो पहले इन्द्रियों में न रही हो।
There is nothing in the intellect which was not first, except the intellect self.
वह ज्ञानार्जन में इन्द्रिय को भी महत्व देता है किन्तु उसके अनुसार इन्द्रिय जन्य ज्ञान पूर्ण नहीं है क्योंकि वह कभी भी सार्वभौम नहीं है।

बुद्धि ज्ञान की जननी है और समस्त ज्ञान हमारे मन में पूर्वअंकित रहते हैं यद्यपि यह अचेतन रूप में होने के कारण ज्ञान नहीं रहते हैं इस बात को स्वीकार करने के साथ ही जब लाइबनिज अनुभव को ज्ञानार्जन में स्थान देने लगता है तो ऐसा प्रतीत होता है उसका बुद्धिवादी सोच अनुभववाद में विलुप्त होने जा रहा है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए लाइबनिज मानता है कि अनुभव ज्ञान को उत्पन्न नहीं करता है वरन वह हमारे मनस के पूर्व अंकित प्रत्ययों को अचेतन रूप से होने से अस्पष्ट और अज्ञात है, प्रकाश में आने का अवसर देता है और उन्हें स्पष्ट कर देता है। इसके लिए लाइबनिज एक उपमा का प्रस्तुत करते हैं उनका कहना है कि जिस प्रकार एक घोड़े में चलने की शक्ति स्वयं ~~अपने~~ होती है एक कोड़ा उसकी शक्ति को कार्य करने की प्रेरणा देता है किन्तु घोड़े को शक्ति नहीं देता इसी प्रकार हमारे इन्द्रियजन्य अनुभव हमारे बुद्धि के शक्तियों को स्पष्ट होने उसे उसको अवगत होने का अवसर प्रदान करता है ~~अत~~ बिना इन्द्रियजन्य अनुभव के इन अज्ञात प्रत्ययों से कभी अवगत नहीं हो सकते हैं।

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy

Scanned with CamScanner